Subject :- Sociology Date :- 26/05/2020
Class :- D-II (H) Paper :- 3rd
Topic :- समकालीन भारतीय समाज की विशेषता
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- (89)

समकालीन भारतीय समाज की विशेषता

समकालीन भारतीय समाज का तात्पर्य स्वतंत्र भारतीय समाज से है। स्वतंत्रता के बाद जिन आधारों पर भारतीय समाज को व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया, उसका पूर्व से कोई लेना-देना नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि समकालीन भारतीय समाज के विवेचन से होगी। ये विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं :-

1. शिक्षा का प्रसार → स्वतंत्रता के पूर्व जहाँ शिक्षा मूल रूप से पुरुषों व उच्च जातियों व सम्भ्रांत परिवारों से सम्बन्धित रही, वहीं आज यह स्त्रियों व निम्न जातियों व साधारण परिवारों से भी जुड़ गयी है। आज स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, यांत्रिक संस्थाओं में सभी लिंग, जाति, धर्म व वर्ग के लोगों को देखा जाता है।
2. आर्थिक विकास → आजाद भारत की नवीन अर्थव्यवस्था में पिछले 65 वर्षों में काफी सुधार हुआ। आज हमारे पास लाखों की संख्या में उद्योगों के आधुनिक उपक्रम हैं, उद्योग सम्बन्धी व तकनीकी कुशलताओं का अच्छा भंडार है, भिलाई व राउरकेला जैसी बड़ी जन-योजनाएँ हैं, हीराकुंड जैसे बड़े बाँध हैं, विकासशील संसार में सर्वोच्च बचत दर है, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में असामान्य विश्वसनीयता प्राप्त की है तथा गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले जनसंख्या में कमी आयी है।
3. आधुनिकता → आज खान-पान, रहन-सहन, पहनावा-ओढ़ावा व सजावट आदि में हम आधुनिक हुये हैं। आर्थिक क्षेत्र में उद्योग संबन्धी तकनीकी विकास व आधुनिकीकरण हुआ है। राजनीतिक क्षेत्र में लोकतंत्र का विकास, संख्या बल की महत्ता व शासक-शासित में पारस्परिकता देखी जाती है। सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों व निम्न जातियों की स्थिति में समानता का विकास, शोषण का अन्त, एक विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, एकाकी परिवार आदि के विकास के रूप में देखा जा सकता है।
4. लोकतांत्रिक समाज → लोकतांत्रिक समाज से लोकतंत्र की तीन विशेषताएँ प्रकट होती हैं - (i) जनता का प्रतिनिधित्व, (ii) जनता के हितों की रक्षण और (iii) जनता के प्रति उत्तरदायित्व। इस प्रकार समकालीन भारत में लोकतंत्र के अन्तर्गत सर्वसाधारण जनता ही सरकार की स्थापना करती है, सरकार सर्वसाधारण के हितों की

Ajanta PRODUCTS Oxford
Scanned with CamScanner

रक्षा करती है और उनकी इच्छानुसार ही पदासीन रहती है।

5. सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकीकरण → भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ बहुत से धर्मों, जातियों, परम्पराओं, भावनाओं, रीति-रीवाजों आदि के लोग हैं। व्यक्ति के ज्ञान के विकास के क्रम में एक भावना यह बनी है कि हम एक भारतीय हैं। भारतीय के रूप में उनके दायित्व व कर्तव्य बनते हैं। ये भावनाएँ सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकीकरण में सहयोगी है।

6. नवीन सामाजिक संरचना → आज भारतीय उतने रूढ़िवादी नहीं है तथा पूर्व के नैतिक मूल्यों व मानदण्डों के प्रति कट्टरवादी नहीं है। आज लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बात करते हैं, वे अनुभवों की कामना करते हैं। वे दूसरे समाजों से सांस्कृतिक तत्वों को लेने में हिचक नहीं करते। उनमें नवीनता के लिए रचनात्मक इच्छा है। यही कारण है कि वर्तमान भारत में संयुक्त परिवार की जगह एकाकी परिवार तथा बहुविवाह की जगह एक विवाह की संख्या बढ़ रही है। विधवा पुनर्विवाह व अन्तर्जातिय विवाह बढ़ रहे हैं। स्त्रियों व अनुसूचित जातियों की स्थिति काफ़ी बदली प्रतीत होती है। इस प्रकार एक नवीन संरचना का निर्माण हुआ है।

7. लौकिकीकरण → आज भारत में धर्म से जुड़ी मान्यताओं में कमी देखी जाती है। धार्मिक, प्रथागत व परम्परागत व्यवहारों में धीरे-धीरे तार्किकता, मानवीयता और व्यवहारिकता का विकास हुआ है। लौकिकीकरण की चार विशेषताएँ हैं: - (i) धर्मवाद का ह्रास, (ii) तार्किकता (iii) विभेदीकरण और (iv) वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

8. न्यायिक या कानूनी समानता → इसके अन्तर्गत पाँच बातें आती हैं - 1. कानून के समक्ष समानता, 2. कानून का समान संरक्षण, 3. कर्तव्यों के प्रसंग में समानता, 4. करों के निर्धारण में समानता और 5. विवेकसंगत आधार पर भेदभाव मान्य। भारतीय राजव्यवस्था में अनुसूचित जातियों को जो विशेष सुविधाएँ प्रदान की गयी है वे इसी श्रेणी में आती है। वर्ग विशेष को प्रदान की गयी इस प्रकार की विशेष सुविधाओं को इस आधार पर न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती कि वे कानून के समक्ष समता के सिद्धान्त के विरुद्ध हैं।

9. समस्याएँ → लोकतंत्रीय भारतीय समाज में भ्रष्टाचार, जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाषावाद की समस्या है। निर्धनता, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता, भिक्षावृत्ति, अपराध, बाल-अपराध, वेश्यावृत्ति, आत्महत्या आदि जैसी समस्याएँ इसी की कड़ी है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner